

जनसंख्या संसाधन एवं सतत् विकास की अवधारणा—विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. श्रीचन्द्र*

सार

मनुष्य सुबह से लेकर सायंकाल तक अनगिनत संसाधनों का प्रयोग करता है। कुछ संसाधन ऐसे हैं जिन्हें बिना कोई मूल्य चुकाए सहज रूप से प्रयोग करते हैं, जैसे हवा, यानी, गैस आदि। जबकि कुछ ऐसे हैं जिनका कोई अन्य मूल्य चुकाता है, विशेष रूप से गांवों में इसे असामान्य पायेंगे जबकि नगरों में रहने वाले इनका भुगतान करते हैं। घर में खाना बनाने के लिए प्रयोग होने वाली ऊर्जा के अनेक रूप हैं। जैसे सूखी घास, फसलों के अवशेष, उपलों, कोयला, तेल के स्टोव, बिजली के हीटर से गैस ओवन तक में बदल सकती है। यह सभी ऊर्जा के स्रोत संसाधन कहलाते हैं। मनुष्य ने समय के साथ उत्तरोत्तर इनके प्रयोग को भी सीखा है। संसाधन के निर्धारण में समय भी एक कारक है। क्योंकि हमारा सामूहिक ज्ञान उसी पर निर्भर करता है। पेलियोलिथिक समय के मनुष्य की कल्पना करते हैं, तो क्या वाय वह यूरेनियम को एक संसाधन मान सकता था? यह विश्लेषणात्मक पहलू है।

शब्दकोश: जनसंख्या संसाधन, सतत् विकास, सामूहिक ज्ञान, पेलियोलिथिक समय, विश्लेषणात्मक पहलू।

प्रस्तावना

संसाधनों का अर्थ एवं अवधारणा

मनुष्य के द्वारा एक या दूसरे तरीके से प्रयोग की जाने वाली सभी (वस्तुओं) सामग्री को संसाधन कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि संसाधन की अवधारणा प्राथमिक रूप से मानव जाति के लिए प्रकृति के उपयोगिता वादी मूल्य पर आधारित है।

उपयोगितावाद की अवधारणा 'जॉन स्टुअर्ट मिल' ने प्रतिपादित की थी। जो मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति की बात करती है। कार्ल जिम्मरमैन ने कहा कि 'संसाधन होते नहीं हैं, बनाए जाते हैं।' जब तक कि कोई भी तटस्थ सामान मनुष्य के द्वारा उपयोग नहीं किया जाता उसे संसाधन नहीं माना जा सकता है। इन्हें उपयोग करने का चरण मुख्यतः उपलब्ध तकनीक के स्तर और जो मनुष्य इस तटस्थ सामान का प्रयोग कर सकते हैं। जो इसकी उपलब्धता पर निर्भर करता है। उदाहरणार्थ यूरेनियम और सागरीय तरंगों के बारे में भी दिया जा सकता है, जिनका प्रयोग वर्तमान में संसाधनों के रूप में हो रहा है।

इसके विपरीत उदाहरण आंधी का हो सकता है, इसमें अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा होती है। किन्तु इसे संसाधन नहीं माना जा सकता, क्योंकि मनुष्य को अभी तक यह ज्ञात नहीं है कि विभिन्न प्रकार की आंधियों से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा को कैसे प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार जब कुनैन के गुणों का पता चला तो यह मलेरिया की दवाई के उत्पादन के लिए 'फार्मास्युटिकल उद्योग' में एक संसाधन के रूप में प्रयोग होने लगी। अतः वर्तमान तथा संभावित संसाधनों की सीमा निर्धारित करने में अनुसंधान तथा विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

* असिसटेंट प्रोफेसर, एम.एस.जे. भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान।

यद्यपि संसाधनों की पहचान में तकनीकी की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। एक विशेष समय पर सामूहिक मानवीय बुद्धिमत्ता के रूप में लिया जा सकता है। जो मनुष्य एवं प्रकृति के गतिशील संबंधों और संसाधनों की प्रकृति तथा प्रकारों के निर्धारण में भूमिका का परिणाम है।

संसाधन कोई भी वस्तु हो सकती है जो मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करती है, इसी प्रकार कोई भी वस्तु जो भविष्य में मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है उसे भी 'सम्भावित संसाधन' की श्रेणी में रखा जा सकता है। स्टॉक उन संसाधनों के भण्डार हैं जो वर्तमान में अप्रयुक्त हैं या उपयोग में नहीं हैं। जब इन भण्डारों को मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों में परिवर्तित किया जाता है तो उन प्रदेशों का संसाधन संग्रह बढ़ जाता है। यह उसे उसकी जनसंख्या को बेहतर सामर्थ्य (भरण-पोषण) प्रदान करने का अवसर देता है।

सामान्यतः दो प्रकार के संसाधन होते हैं। प्रथम प्राकृतिक संसाधन जैसे-तेल, गैस, खनिज एवं जल। इन प्राकृतिक संसाधनों में कुछ नवीकरणीय संसाधन होते हैं, जैसे-हवा, सौर ऊर्जा और जल विद्युत और कुछ अनवीकरणीय (गैर-नवीकरणीय) संसाधन हैं। जैसे-कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस। यदि नवीकरणीय संसाधनों का अत्यधिक शोषण किया जाए तो वह अनवीकरणीय बन सकते हैं।

दूसरा जनसंख्या है जो मानव संसाधन है। मानव संसाधनों की मात्रा व गुणवत्ता दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता और सकल आपूर्ति को बढ़ाने के लिए कर्मचारियों की गुणवत्ता में सुधार और आकर में वृद्धि या दोनों ही किया जाना महत्वपूर्ण है।

विभिन्न प्रदेशों के मध्य संसाधनों का वितरण अत्यधिक भिन्न है। कुछ देशों के पास प्राकृतिक और मानवीय संसाधन दोनों ही उच्च स्तरीय हैं। अमेरिका और मोजाम्बिक के पास उच्च प्राकृतिक संसाधन हैं किन्तु मानव संसाधन अपर्याप्त हैं। अन्य देशों जैसे, जापान, सिंगापुर और हांगकांग के पास या तो प्राकृतिक संसाधन ही नहीं या बहुत कम हैं, किन्तु इन सबके पास उच्च स्तरीय मानव संसाधन हैं।

प्राकृतिक संसाधन वह हैं जो सीधे प्रकृति से प्राप्त होते हैं। जिसमें बहुत सी वस्तुएं जैसे हवा, जल, पत्थर, जानवर और पौधे इत्यादि आते हैं। पदार्थों की विशेषताओं के आधार पर उन्हें विभिन्न वर्गों व श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। प्राकृतिक संसाधनों को नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधनों में वर्गीकृत किया गया है। यह 'निधि' और 'प्रवाह' संसाधनों के रूप में भी पाए जाते हैं। 'निधि' संसाधन 'भण्डार' संसाधनों के रूप में भी जाने जाते हैं।

जिनका एक दिन समाप्त होना निश्चित है। अतः इन्हें अनवीकरणीय संसाधनों की श्रेणी में रखा जाता है। जैसे खनिज एवं ईंधन दूसरी और संसाधन जैसे सूर्य का प्रकाश, बहता हुआ पानी, हवा, वायु ऐसे संसाधन हैं जो कुछ अनिश्चित अपवादों को छोड़कर विश्व के सभी भागों में उपलब्ध हैं। इसीलिए ये नवीकरणीय संसाधन कहे जाते हैं या इन्हें 'सर्वव्यापी' भी कहा जाता है।

जनसंख्या एवं संसाधन

1984 में विश्व में कुल मृत्यु दर 6.7 थी। एक सरल संबंध यह बताता है कि जनसंख्या की उच्च वृद्धि के कारण खाने की कमी पड़ी। भारत में भी भूख से कई लोगों की मृत्यु हुई है। विशेष रूप से उन राज्यों में जो कम विकसित हैं जैसे ओडिसा प्रश्न यह उठता है कि भारत कम मात्रा में अनाज उत्पादित करता है। भारत अपनी जनसंख्या का पोषण नहीं कर सकता? मानव स्वयं एक संसाधन है। जो संसाधनों का उपयोगकर्ता है।

मानव जनसंख्या निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया में है। संपूर्ण पृथ्वी के संदर्भ में मानवीय परिवर्तन जन्म और मृत्यु का परिणाम है। जनसंख्या परिवर्तन को शब्दों, सांख्यिकी और (ग्राफ) रेखांकन के द्वारा वर्णित किया जा सकता है। जनसंख्या परिवर्तन के दो सामान्य मापक अशोधित जन्म दर (क्रूड वर्थ रेट सीबीआर) एवं अशोधित मृत्यु दर (क्रूड डेथ रेट, सीडीआर) हैं।

सी.बी.आर. एवं सी.डी. आर. सामान्यतः एक दी हुई जनसंख्या में लोगों पर होने वाली संख्या से व्यक्त होता है। इसके द्वारा भूगोलवेत्ता विभिन्न जनसंख्या आकार वाले देशों में जनसंख्या गतिकी की तुलना कर सकते हैं। प्रादेशिक स्तर पर एक स्थान से जनसंख्या का दूसरे स्थान पर प्रस्थान भी मानवीय जनसंख्या के आकार के निर्धारण का महत्वपूर्ण कारक है। मानव जनसंख्या की गतिशीलता प्राकृतिक संसाधनों के वितरण, तकनीकी ज्ञान के स्तर, सामाजिक—आर्थिक और राजनैतिक प्रक्रियाओं पर निर्भर करती है।

आर्थिक दशाओं में प्रगति के साथ मृत्यु दर कम हुई है। काफी हद तक जनसंख्या की उच्च दर का साक्षी रहा। वर्ष 1990 में पृथ्वी पर लगभग 1.6 बिलियन मनुष्य रह रहे थे। 100 वर्ष के पश्चात् विश्व की जनसंख्या 6 बिलियन लोगों से अधिक थी। 2011 में यह 7 बिलियन हो गई।

अनुमान लगाया जा रहा है कि 2050 तक यह 9 बिलियन हो जाएगी। पिछली आधी शताब्दी में मानवीय जनसंख्या के आकार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इस हिसाब से यदि भविष्य की खाद्यान्न, जल और ऊर्जा की आवश्यकता का अनुमान लगाया जाए तो बढ़ती हुई जनसंख्या देश के संरचनात्मक ढाँचे और संसाधनों जैसे स्वास्थ्य सुविधाएं व शिक्षा पर अतिरिक्त भार पड़ेगा।

धरती पर संसाधन सीमित है। यदि हमारे यहां खाना, जल ऊर्जा एवं अन्य संसाधन समाप्त हो जाए तो हमारे पास जाने के लिए कोई दूसरा ग्रह नहीं है। सरल शब्दों में इस अवधारणा को पृथ्वी की '*वहन क्षमता*' कहा जाएगा। वहन क्षमता जनसंख्या का वह आकार है जिसका निर्वाह एक विशेष वातावरण अनिश्चित काल तक कर सकता है। यह उस वातावरण में संसाधनों की उपलब्धता पर आधारित है। यह खाने की उपलब्धता, जलापूर्ति और वातावरण की दशाओं में परिवर्तन के अनुसार समय के साथ बदल सकती है। वहन क्षमता के विपरीत एक अवधारणा समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य संसाधनों के असमान वितरण की है।

यहाँ महात्मा गांधी के इन शब्दों का उल्लेख करना अत्यंत ही प्रासंगिक है कि '*सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन हैं किंतु किसी एक के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।*' 18 वीं शताब्दी के विभिन्न विद्वानों और विचार को पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन आधार और मानव जनसंख्या के संबंधों पर विचार विमर्श करते आए हैं। यह थॉमस रॉबर्ट माल्थस थे जिन्होंने जनसंख्या एवं संसाधनों का व्यवस्थित विश्लेषण किया। उनके पश्चात् कार्ल मार्क्स थे जिनका परिपेक्ष्य माल्थस से पूर्णतया भिन्न था।

जनसंख्या का आकार

जनसंख्या में वृद्धि सामान्य रूप से नहीं होती है। ना ही सभी स्थानों पर इस वृद्धि के समान परिणाम होते हैं। इस भिन्नता का कारण पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का वितरण और तकनीकी ज्ञान का स्तर है जो मानव जनसंख्या को नए संसाधनों का निर्माण करने में उपलब्ध संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होता है। जनसंख्या अपने आप में संसाधन है। साथ ही यह कैसे संसाधनों की गुणवत्ता बढ़ाती है। उसी समय उनके लिए समस्या भी बन जाती है।

जनसंख्या के आकार को सदैव विभिन्न प्रकार से मापा गया है जिसमें दो तरीके अत्यंत सरल हैं। प्रथम कुल जनसंख्या और दूसरा एक इकाई क्षेत्र पर लोगों की संख्या या जनसंख्या का घनत्व इस अवधारणा का आरंभ जर्मन प्रोफेसर '*कार्ल विनकेलब्लेच*' (1810 1865) के लेखन से खोजा जा सकता है। उन्होंने जनसंख्या सिद्धांत एवं नीति का वर्णन करते हुए जनसंख्या के आकार को श्रेणी बद्ध किया।

- न्यून जनसंख्या वाले राष्ट्र
- अधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र
- सामान्य जनसंख्या वाले राष्ट्र

अर्थात् एक ऐसा आकार जो अधिकतम संभावित उत्पादकता के अनुकूल हो। इस सिद्धांत में योगदान करने वाले अन्य उल्लेखनीय विचारक डॉल्टन, वेस्ट, कैनन और रॉबिनस हैं। यह सिद्धांत एक देश के लिए आर्थिक रूप से आदर्श जनसंख्या के आकार को परिभाषित करता है। प्राकृतिक संसाधनों को पूंजी और तकनीकी

ज्ञान के आधार पर जनसंख्या का वह आकार जो जो प्रति व्यक्ति आय को अधिकतम करता है, 'आदर्श जनसंख्या' कहा जाता है। डाल्टन के शब्दों में "आदर्श जनसंख्या वह है जो प्रति व्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करती है।" आदर्श जनसंख्या का सिद्धांत तीन महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर आधारित है। न्यून जनसंख्या, जनसंख्या आधिक्य और आदर्श जनसंख्या।

न्यून जनसंख्या

यदि एक देश की जनसंख्या अपने प्राकृतिक संसाधनों का कुशलता पूर्वक प्रयोग करने के लिए पर्याप्त नहीं है, तब इस देश को 'न्यून जनसंख्या वाला देश' कहा जाएगा। इस दशा में जनसंख्या में वृद्धि से वर्धमान प्रतिफल का नियम लागू हो जाएगा न्यून जनसंख्या की दशा में अधिक मात्रा में उत्पादन नहीं किया जा सकता है। जिस कारण कुल उत्पादन प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त श्रम शक्ति के कारण, विशिष्टकरण भी संभव नहीं हो पाता। विशिष्टकरण के अभाव में बड़े पैमाने पर उत्पादन वाली अर्थव्यवस्था के लाभ नहीं लिए जा सकते।

जनसंख्या आधिक्य

यदि एक देश की जनसंख्या इसके संसाधनों के संबंध में बहुत बड़ी है तब इस देश को 'जनसंख्या आधिक्य' वाला देश कहा जाएगा। अधिक जनसंख्या का तात्पर्य यह है कि उपलब्ध पूँजी और प्राकृतिक संसाधन वास्तव में जितने लोगों के लिये पर्याप्त होते हैं। उससे कहीं अधिक मनुष्यों द्वारा प्रयोग किये जा रहे हैं। जनसंख्या आधिक्य के तीन खतरे हैं। **प्रथम** उपलब्ध संसाधन सभी को लाभदायक रोजगार देने के लिये पर्याप्त नहीं है। **द्वितीय** जनसंख्या के कारण, औसत उत्पादकता गिर जायेगी। ऐसे में प्रच्छन्न रोजगार की अनिवार्यता की संभावना अधिक होगी। **तृतीय** इससे जीवन स्तर प्रभावित होगा।

आदर्श जनसंख्या या अनुकूलतम जनसंख्या

एडविन कैनन (1861-1935) एक अंग्रेज अर्थशास्त्री थे जिन्हें यह श्रेय दिया जाता है कि उन्होंने 'आदर्श जनसंख्या' को परिभाषित किया। यह "आदर्श जनसंख्या की अवधारणा रूप में जानी गयी एक ऐसी दशा जहाँ संसाधनों का अधिकतम उपयोग उपलब्ध हो। जितना अधिकतम सम्भव हो उतना ऊँचा जीवन स्तर प्राप्त किया गया हो। एक पैरिटो ईष्टतम दशा कैनन ने आदर्श जनसंख्या शब्द का प्रयोग यथासंभव श्रेष्ठ जनसंख्या के पर्याय के रूप में किया है। इन शब्दों में इसका स्पष्टीकरण किया "एक दिये हुए समय पर एक भूभाग पर पायी जाने वाली जनसंख्या उस समय के उद्योगों की अवधारणा की व्याख्या कई प्रकार से है।"

इसका अर्थ जनसंख्या के उस आकार से है जिससे परिणामस्वरूप अधिकतम प्रति व्यक्ति आय प्राप्त होती है। उच्चतम उत्पादकता जिसे विभिन्न तरीकों से मापा जाता है। उच्च स्तरीय कम परिभाषित आर्थिक संकेतकों जैसे कि आर्थिक कल्याण, जीवन निर्वाह का स्तर, वास्तविक आय और कुछ दशाओं में रोजगार द्वारा मापा जाता है।

आदर्श एक निश्चित या जड़ संख्या नहीं है, वरन् गतिशील हैं। प्राकृतिक पूँजी संसाधनों एवं तकनीक के स्तर पर जनसंख्या का एक निश्चित आकार होगा जहाँ प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अधिकतम होगी। किन्तु पूँजी और प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा एवं तकनीक का स्तर परिवर्तित होने वाले विषय है जब तकनीक में सुधार होता है या नए संसाधनों की खोज होती है। जिससे जनसंख्या का आदर्श स्तर भी परिवर्तित होता जाता है।

आर्थिक आदर्श (अनुकूलता) की अवधारणा को प्रतिबंधित माना गया था। विद्वानों ने इसमें स्वास्थ्य एक राष्ट्र की दीर्घायु, परिवार का आदर्श आकार, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, ऊर्जा, सुरक्षा, अन्य आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सौन्दर्यबोध संबंधी कारकों को भी आदर्श जनसंख्या में शामिल किया है। जनसंख्या के सिद्धांत में आर्थिक आदर्श मुख्य आधार है। धीरे-धीरे अधिकतम उत्पादन के लिए जनसंख्या के अनुकूलतम आकार के विचार को स्वीकार कर लिया गया।

जनसंख्या संसाधन एवं सतत् विकास की अवधारणा

20 वी शताब्दी में विश्व की जनसंख्या तेजी से बढ़ी है। जनसंख्या समस्या के विस्तार और कारणों पर सैद्धान्तिक वाद विवाद भी बढ़ा। 1968 में जब विश्व की जनसंख्या 3 बिलियन से ज्यादा होने लगी। पॉल एहरलिच ने एक पुस्तक 'दी पॉपुलेशन बॉम्ब' लिखी। यह व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाला प्रकाशन रहा है। केवल युनाइटेड स्टेट्स में ही इसकी कई मिलियन प्रतिलिपियों की बिक्री हुई। एहरलिच जो एक जैव वैज्ञानिक है ने निश्चयपूर्वक यह कहा की जनसंख्या वृद्धि पृथ्वी के संसाधनों के नवीकर की क्षमता व कृषि वृद्धि को पीछे छोड़ते हुये कही अधिक तेजी से हो रही है। एहरलिच ने भविष्यवाणी कि यदि जनसंख्या प्राकृतिक वृद्धि की वर्तमान दर बढ़ती रही तो परिणामस्वरूप होने वाले खाद्यान्न की कमी और बिमारियों से जनसांख्यिकीय आपदा का आना निश्चित है।

संसाधन तकनीक पर निर्भर है। यह तकनीक का स्तर ही है जो सम्पूर्ण मौजूदा जनसंख्या के लिए संसाधन की उपलब्धता की मात्रा और पहुंच को निर्धारित करता है। 1980 और 1990 के बीच विश्व की जनसंख्या 800 मिलियन से अधिक हो गयी। यह एक दशक में होने वाली सबसे बड़ी वृद्धि है। इसके कारण बहुत लोगो को यह यकीन हो गया कि जनसंख्या के दबाव और परिणामतः होने वाली संसाधनों की दुर्लभता के कारण संसाधन की कीमत बढ़ जायेगी। किन्तु सितम्बर, 1990 में मुद्रास्फीति के कारण पाँचों पदार्थों का मूल्य गिर गया, जिसके कारण 'एहरलिच' को 5765 डॉलर का चेक सिमोन को भेजना पड़ा।

एहरलिच को एक सरल समीकरण बनाने का श्रेय जाता है जो वातावरण के प्रभाव से जनसंख्या के सम्बन्ध का परिक्षण करता है। इसे समीकरण के रूप में जाना जाता है। यह समीकरण च्रचए एहरलिच और होलड्रन में 1970 में प्रस्तुत किया गया था। यह इस तर्क पर आधारित है कि पर्यावरणीय प्रभाव (1) तीन परिवर्ती राशियों का परिणाम है। जनसंख्या (च): समृद्धि (1) और तकनीक (ज)

$$\text{जैसे: } I = P \times A \times T$$

यह इस तथ्य को समझने में प्रयुक्त होता है कि पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव को कुछ अन्य कारक प्रभावित करते हैं। मौलिक रूप से यह पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव पर बल देते हैं।

जनसंख्या

औद्योगिक क्रान्ति के समय से जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। P (जनसंख्या) में वृद्धि के परिणामस्वरूप (पर्यावरण पर प्रभाव) में वृद्धि होती है, क्योंकि यदि अन्य बातें समान रहें तो जनसंख्या वृद्धि से भू-उपयोग, संसाधन प्रयोग और प्रदूषण भी बहुत अधिक बढ़ जाता है।

समृद्धि

समृद्धि को सामान्यता: प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (लक्क) से मापा जाता है। समृद्धि में वृद्धि से वस्तुओं का उपयोग बढ़ जाता है, जिसके विभिन्न प्रकार के प्रभाव हो सकते हैं, उदाहरण के लिए प्लास्टिक पैकेजिंग, स्टायरोफेम, अपरिष्कृत तेल, दुर्लभ मृदा खनिज और जल के प्रयोग का बढ़ना आदि।

तकनीक

तकनीक यह बताती है कि तकनीक के प्रयोग द्वारा बढ़ना गहन संसाधन उत्पादन और परिणामतः समृद्धि को बढ़ाया जा सकता है। परिष्कृत तरीकों एवं कुशलता के द्वारा प्रौद्योगिकी में कमी की जा सकती है, इससे वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव भी कम हो जायेगे। यदि शोध और विकास निरन्तर चलते रहे तो समय के साथ तकनीक के कम होने की संभावना रहती है।

निष्कर्ष

सतत् विकास का अर्थ है कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही समान या एक इससे भी उत्तम संसाधन आधार वसीयत के रूप में भविष्य के लिए छोड़ा जाए। वर्तमान आवश्यकताओं को

पूरा करने के लिए भविष्य की आवश्यकताओं से समझौता नहीं किया जाए। नीतियों की योजना बनाते समय आर्थिक एवं पर्यावरण संबंधों दोनों तत्वों को समायोजित किया जाए। मानव विकास और पर्यावरण का संबंध दो तरफा है। जबकि पर्यावरण मानव कल्याण और मानव भलाई में अपना योगदान देता है, साथ ही आवश्यक संसाधन प्रदान करता है।

यदि आर्थिक प्रगति की प्रक्रिया में पर्यावरण का ह्रास हो जाए तो भविष्य की आर्थिक प्रगति भी खतरे में पड़ जाएगी। इस पृष्ठभूमि में 1987 में, अकाल के कुछ ही वर्षों बाद 'युनाइटेड नेशन्स' ने ब्रन्टलैण्ड रिपोर्ट का विमोचन किया। 'आवर कॉमन फ्यूचर' शीर्षक से प्रकाशित यह दस्तावेज पर्यावरणीय संसाधनों के नाश पर खेद व्यक्त करता है।

यह उन प्रभावों को रेखांकित करता है जो यह ह्रास विश्व जनसंख्या की सामाजिक और आर्थिक वृद्धि पर डालेगा। ब्रन्टलैण्ड रिपोर्ट का शीर्षक आयोग की अध्यक्ष ग्रे हारलेम इंटरलैंड के नाम पर रखा गया है। यह उस समय नार्वे की प्रधानमंत्री भी थी। उन्होंने स्वीकार किया कि बहुत से पर्यावरणीय विषय अपनी प्रकृति में वैश्विक हैं। संसाधन समस्याओं के बढ़ते हुए स्तर के अभियान में, यह दस्तावेज सतत् विकास की आवश्यकता की उद्घोषणा करता है।

यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जनसंख्या संसाधन संबंध में अंतर है। यहां संसाधन प्रचुरता है, किन्तु जनसंख्या इनका उपभोग एक सीमित सीमा तक ही कर सकती है, क्योंकि वे अभी भी अर्थव्यवस्था के जीवन निर्वाह स्तर पर हैं। इसके विपरीत, कुछ स्थानों पर जनसंख्या संकेन्द्रण पाया जाता है। वहां संसाधन उपलब्धता से अधिक संसाधनों का उपयोग करते हैं।

क्योंकि उन्होंने उच्च तकनीक का विकास कर लिया है जो उन्हें उन स्थानों तथा क्षेत्रों तक पहुंचाने में समर्थ बनाते हैं जहां संसाधन हैं। उदाहरण – अलास्का के तेल क्षेत्र निरंतर बढ़ता उपभोग तथा रिक्तिकरण वर्तमान संसाधनों के धारणीय उपयोग की मांग करता है क्योंकि वे सीमित हैं। धारणीय का मुद्दा कार्यवाही में कम तथा बहस में ज्यादा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Carr-Saunders, A.M. (1936) *World Population: Past Growth and Present Trends*. Oxford: Clarendon Press.
2. Ehrlich, R., Ehrlich, A. H. and Holdren, I.P. (1978). *Ecoscience: Population, Resource, Environment*. Reading: W.H. Freeman and co.
3. WCED (1991). *Our Common Future* New York: Oxford University Press.
4. Meadows, D. Randers, J. and Meadows, D. eds. (1979). *The Limits to Growth: A Report for the Club of Rome's Project on the Predicament of Mankind*. London: Earthscan.
5. भार्गव, वी.एस., राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण, भरतपुर, 1971
6. गुप्ता, कुंज बिहारी लाल, दी एवोल्यूशन ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ दी फॉर्मर, भरतपुर स्टेट, 1722–1947
7. ले. सी.के.एम. वाल्टर, गजेटियर ऑफ भरतपुर स्टेट, आगरा, 1868
8. राजस्थान सरकार बेसिक स्टेटिस्टिक्स आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, राजस्थान, भरतपुर 2011
9. के.के. सहगल, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, भरतपुर, जयपुर, 1973, एम.सी. जोशी, डीग, नई दिल्ली, 1982.

